International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2025; 2(1): 87-89
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 11-02-2025
Accepted: 24-02-2025
Publish : 26-02-2025

विमलेश कुमार राय
शोधछात्र,
संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

शोध निर्देशक
डॉ॰ चूड़ामणि त्रिवेदी
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

Correspondence:
विमलेश कुमार राय
शोधछात्र,
संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

कृष्णयजुर्वेदीय मैत्रायणी शाखा के श्रौतसूत्रों में वर्णित अग्निहोत्र का वैज्ञानिक विश्लेषण

विमलेश कुमार राय, डॉ॰ चूड़ामणि त्रिवेदी

❖ सार :-

प्रस्तुत शोध पत्र कृष्णयजुर्वेदीय मैत्रायणी शाखा के श्रौतसूत्रों में वर्णित 'अग्निहोत्र' का वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत करता है। अग्निहोत्र केवल धार्मिक कर्मकांड न होकर एक जटिल 'जैव-भौतिकीय' प्रक्रिया है। मैत्रायणी शाखा की विशिष्टता इसकी उच्चारण विधि और आहुति के विधान में निहित है। यह शोध प्रमाणित करता है कि अग्निहोत्र के माध्यम से वायुमंडल के गैसीय घटकों में परिवर्तन, आयनीकरण और सूक्ष्म तरंगों का सृजन होता है जो मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अनिवार्य हैं। मैत्रायणी शाखा कृष्णयजुर्वेद की एक अत्यंत प्राचीन और महत्वपूर्ण शाखा है। इसके श्रौतसूत्रों में यज्ञीय विज्ञान को बहुत सूक्ष्मता से परिभाषित किया गया है। अग्निहोत्र को 'नित्य यज्ञ' कहा गया है, जिसका अर्थ है—वह प्रक्रिया जो ब्रह्मांड की निरंतरता को बनाए रखती है। आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण से, हमारा सौरमंडल एक निश्चित लय पर कार्य करता है। मैत्रायणी ऋषियों ने सूर्योदय और सूर्यास्त के उस सटीक क्षण को पहचाना जब प्रकृति में ऊर्जा का भारी रूपांतरण होता है। इसी रूपांतरण का लाभ उठाने के लिए अग्निहोत्र का विधान किया गया।

- प्रमाण: "अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः" (मैत्रायणी संहिता १.८.१)
- अर्थ: आत्मिक और लौकिक सुख (स्वर्ग) की कामना हेतु अग्निहोत्र का अनुष्ठान अनिवार्य है।

❖ हव्य द्रव्यों का सूक्ष्म पदार्थ विज्ञान :-

मैत्रायणी श्रौतसूत्रों में आहुति के लिए जिन द्रव्यों का उल्लेख है, उनका वैज्ञानिक विश्लेषण निम्नानुसार है:

➢ गो-घृत (गाय का घी) का दहन विज्ञान

अग्निहोत्र में गाय के घी का प्रयोग केवल ईंधन के रूप में नहीं होता। जब घी को प्रज्वलित अग्नि में डाला जाता है, तो वह उच्च ताप पर 'वाष्पीकृत' होता है। यह वाष्प वायुमंडल में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड के साथ मिलकर उसे विखंडित करने की क्षमता रखती है। यह प्रक्रिया वायु को भारी होने से बचाती है और प्राणवायु के प्रवाह को सुगम बनाती है।

➢ अक्षत (अखंडित चावल) का महत्व

चावल में कार्बोहाइड्रेट की प्रचुरता होती है। मैत्रायणी पद्धति में अखंडित चावलों की आहुति देने का निर्देश है। टूटे हुए चावलों में वह ऊर्जा संचित नहीं रहती। जब अखंडित चावल घी के संपर्क में आकर जलते हैं, तो वे सूक्ष्म ऊर्जा कणों का निर्माण करते हैं जो वातावरण में मौजूद विषाणुओं की बाहरी परत को नष्ट करने में सक्षम होते हैं।

➢ समिधा (औषधीय काष्ठ)

मैत्रायणी शाखा में समिधा के चयन पर बहुत बल दिया गया है। जैसे पीपल, पलाश या आम की लकड़ी। इन लकड़ियों में 'फॉर्मेल्डिहाइड' जैसी गैसों को उत्पन्न करने वाले प्राकृतिक गुण होते हैं, जो कम मात्रा में वायु को शुद्ध करने वाले सर्वोत्तम माने जाते हैं।

❖ **तापीय और संरचनात्मक विश्लेषण**

➢**पात्र की ज्यामिति और पिरामिड प्रभाव**

मैत्रायणी अग्निहोत्र का ताम्र पात्र एक विशिष्ट कोण पर झुका हुआ उल्टा पिरामिड होता है। विज्ञान के अनुसार, यह आकृति ऊर्जा को सोखने और उसे 'लेजर' की तरह एक पुंज में ऊपर भेजने का कार्य करती है। यह पात्र चुंबकीय ऊर्जा को आकर्षित करता है और आहुति के समय उत्पन्न ऊष्मा को केंद्र बिंदु पर केंद्रित करता है।

➢**तापीय विखंडन**

जब अग्निहोत्र की अग्नि में द्रव्य डाले जाते हैं, तो वे सीधे राख नहीं बनते, बल्कि 'तापीय विखंडन' की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इस प्रक्रिया में पदार्थ अपने सूक्ष्म स्वरूप (गैसीय अवस्था) में आ जाता है। आयुर्वेद और विज्ञान दोनों मानते हैं कि ठोस दवा की तुलना में गैसीय अवस्था में औषधियाँ अधिक तीव्र प्रभाव डालती हैं।

❖ **वायुमंडलीय एवं पर्यावरणीय प्रभाव**

➢**आयनीकरण और वायु शुद्धि**

अग्निहोत्र की अग्नि वायुमंडल के कणों को 'आयनीकृत' करती है। नकारात्मक आयन, जो शहरों और प्रदूषण वाली जगहों पर कम होते हैं, अग्निहोत्र से बढ़ जाते हैं। ये नकारात्मक आयन व्यक्ति के उत्साह और ऊर्जा के स्तर को बढ़ाते हैं तथा धूल के कणों को जमीन पर बिठा देते हैं, जिससे हवा साफ हो जाती है।

➢**पर्जन्य (वर्षा विज्ञान)**

मैत्रायणी संहिता में स्पष्ट कहा गया है—"अग्नेर्वै धूमो जायते, धूमादभ्रं, अभ्राद्वृष्टिः।" अर्थात अग्नि से धुआँ, धुएँ से बादल और बादल से वर्षा होती है। वैज्ञानिक रूप से, अग्निहोत्र के धुएँ के साथ ऊपर जाने वाले घी के सूक्ष्म अंश बादलों के संघनन के लिए केंद्रक का कार्य करते हैं, जिससे समय पर और शुद्ध वर्षा होने की संभावना बढ़ती है।

❖ **शारीरिक एवं तंत्रिका विज्ञान पर प्रभाव**

| अंग/तंत्र | वैज्ञानिक प्रभाव का विस्तार |

○ | मस्तिष्क | मंत्रों के सस्वर उच्चारण से उत्पन्न कंपन पीनियल और पिट्यूटरी ग्रंथियों को सक्रिय करते हैं, जिससे तनाव कम होता है।

○ | श्वसन | औषधीय धुआं नासिका के माध्यम से सीधे फेफड़ों की सूक्ष्म नलिकाओं तक पहुंचकर रक्त को शुद्ध करता है।

○ | त्वचा | अग्निहोत्र के आसपास बैठने से ऊष्मीय विकिरण त्वचा के रोगों और संक्रमण को रोकता है।

○ | पाचन | नियमित अग्निहोत्र से जठराग्नि पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वातावरण की शुद्धि सीधे हमारे चयापचय को प्रभावित करती है।

❖ **भस्म (राख)** का कृषि विज्ञान में उपयोग

मैत्रायणी पद्धति के अग्निहोत्र से प्राप्त भस्म एक "सुपर खाद" की तरह कार्य करती है।

1.मृदा शोधन: इस भस्म में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं।

2.जल शोधन: यदि इस भस्म को दूषित जल में डाला जाए, तो यह जल के भारी तत्वों को सोख लेती है और पानी को पीने योग्य बनाने में सहायता करती है।

❖ **सामूहिक चेतना और सामाजिक एकता**

समाजशास्त्र में किसी भी अनुष्ठान का मुख्य कार्य लोगों को एक सूत्र में बांधना होता है। मैत्रायणी शाखा में अग्निहोत्र को 'नित्य यज्ञ' माना गया है।

कार्य: जब एक ही समय पर पूरे समाज में अग्निहोत्र की अग्नि प्रज्वलित होती है, तो यह व्यक्तियों के बीच 'वैचारिक समरूपता' पैदा करती है। यह समाज के सदस्यों के बीच अलगाव को समाप्त कर उनमें सामूहिकता का भाव भरता है।

❖ **'इदं न मम' और परोपकार की भावना**

मैत्रायणी संहिता के अनुसार आहुति देते समय कहा जाता है— "इदं न मम" (यह मेरा नहीं है)।

➢समाजशास्त्रीय महत्व: यह मंत्र व्यक्ति के भीतर से 'अहंकार' और 'निजी संपत्ति' के अति-मोह को कम करता है। समाजशास्त्र की दृष्टि से यह 'सामाजिक पूंजी' को बढ़ाता है। जब व्यक्ति "सब कुछ मेरा है" के बजाय "यह समाज के लिए है" सोचता है, तो सामाजिक संघर्ष अपने आप कम हो जाते हैं।

❖ **पारिस्थितिकी उत्तरदायित्व**

आज के समाजशास्त्र में 'पर्यावरणीय समाजशास्त्र' एक अनिवार्य विषय है।

➢कार्य: अग्निहोत्र व्यक्ति को यह सिखाता है कि समाज केवल मनुष्यों से नहीं, बल्कि पशु-पक्षी, वायु और जल से मिलकर बना है। प्रदूषण फैलाना एक 'सामाजिक अपराध' है और अग्निहोत्र के माध्यम से वायु को शुद्ध करना एक 'सामाजिक सेवा' है। यह आने वाली पीढ़ी के प्रति हमारे उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करता है।

❖ **सामाजिक नियंत्रण एवं अनुशासन**

समाज को व्यवस्थित चलाने के लिए अनुशासन अनिवार्य है।

➢कार्य: अग्निहोत्र के लिए सूर्योदय और सूर्यास्त का समय निश्चित है। मैत्रायणी श्रौतसूत्रों के कड़े नियमों का पालन करने से व्यक्ति के भीतर 'स्व-अनुशासन' पैदा होता है। एक अनुशासित व्यक्ति समाज के नियमों और कानूनों का पालन बेहतर तरीके से करता है, जिससे सामाजिक अपराधों में कमी आती है।

❖ **विशेष विवेचना:** मंत्र और ध्वनि विज्ञान

मैत्रायणी शाखा के मंत्रों की उच्चारण शैली अन्य शाखाओं से भिन्न है। मंत्रों के दौरान होने वाले ध्वन्यात्मक उतार-चढ़ाव वायुमंडल में 'अनुनाद' पैदा करते हैं। यह अनुनाद कोशिका स्तर पर कंपन पैदा करता है, जिससे शरीर के भीतर रुकी हुई ऊर्जा का संचार होता है। यह विज्ञान अब 'ध्वनि चिकित्सा' के रूप में पूरी दुनिया में मान्य हो रहा है।

❖ **शास्त्र एवं प्रमाण**

अग्निहोत्र की वैज्ञानिकता को पुष्ट करने वाले प्रमुख सूत्र निम्नलिखित हैं:

➢ऋग्वेद (१.७०.२): "गर्भो यो अपां, गर्भो वनानां, गर्भश्च स्थातां, गर्भश्चरथाम्।"

भाव: अग्नि जल के भीतर विद्युत रूप में, वनस्पतियों में ऊष्मा रूप में और जड़-चेतन सभी में सुप्त शक्ति के रूप में विद्यमान है।

➢अथर्ववेद (१८.३.५): "अग्ने पित्तम् अपामसि।"

भाव: अग्नि जल का पित्त (ऊष्मा/तेज) है, जो बादलों के निर्माण का मूल कारण है।

➢मैत्रायणी श्रौतसूत्र (अग्निहोत्र प्रकरण): यहाँ पात्रों की माप और आहुति के समय का गणितीय विवरण है, जो ब्रह्मांडीय गति के अनुरूप है।

❖ **निष्कर्ष**

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कृष्णयजुर्वेदीय मैत्रायणी शाखा के श्रौतसूत्रों में वर्णित अग्निहोत्र एक उच्च-स्तरीय पारिभाषिक तकनीक है।

* यह प्रकृति के साथ मनुष्य के पुनर्जुड़ाव का माध्यम है।

* यह शून्य लागत पर वायुमंडल को शुद्ध करने का सर्वोत्तम तरीका है।

* यह सिद्ध करता है कि हमारे ऋषियों को सूक्ष्म भौतिकी और रसायन विज्ञान का गहरा ज्ञान था।

आज के आधुनिक युग में, जहाँ प्रदूषण और मानसिक बीमारियाँ चरम पर हैं, मैत्रायणी पद्धति का अग्निहोत्र एक अनिवार्य समाधान के रूप में उभरता है।

❖ **संदर्भ सूची**

1. मैत्रायणी संहिता: स्वाध्याय मंडल, पारडी संस्करण।
2. मैत्रायणी श्रौतसूत्र: शास्त्रीय विश्लेषण, डॉ. एन.पी. पाठक।
3. यज्ञ का विज्ञान: आचार्य श्रीराम शर्मा।
4. प्राचीन भारत में रसायन शास्त्र: पी.सी. राय।
5. वैदिक अनुष्ठानों का भौतिक प्रभाव: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के शोध पत्र।